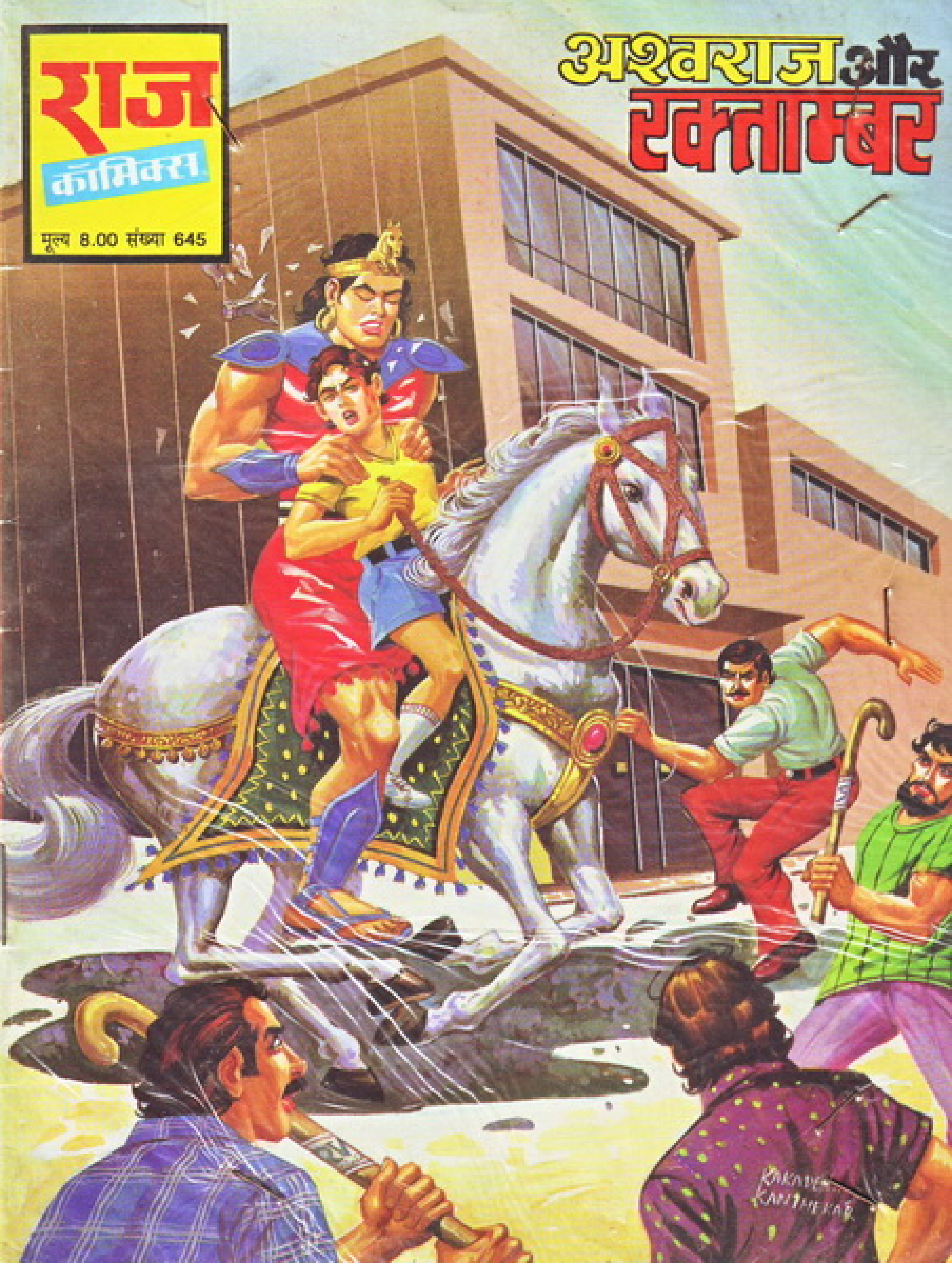
राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00 संख्या 645
अश्वराज और
रक्ताम्बर

1471

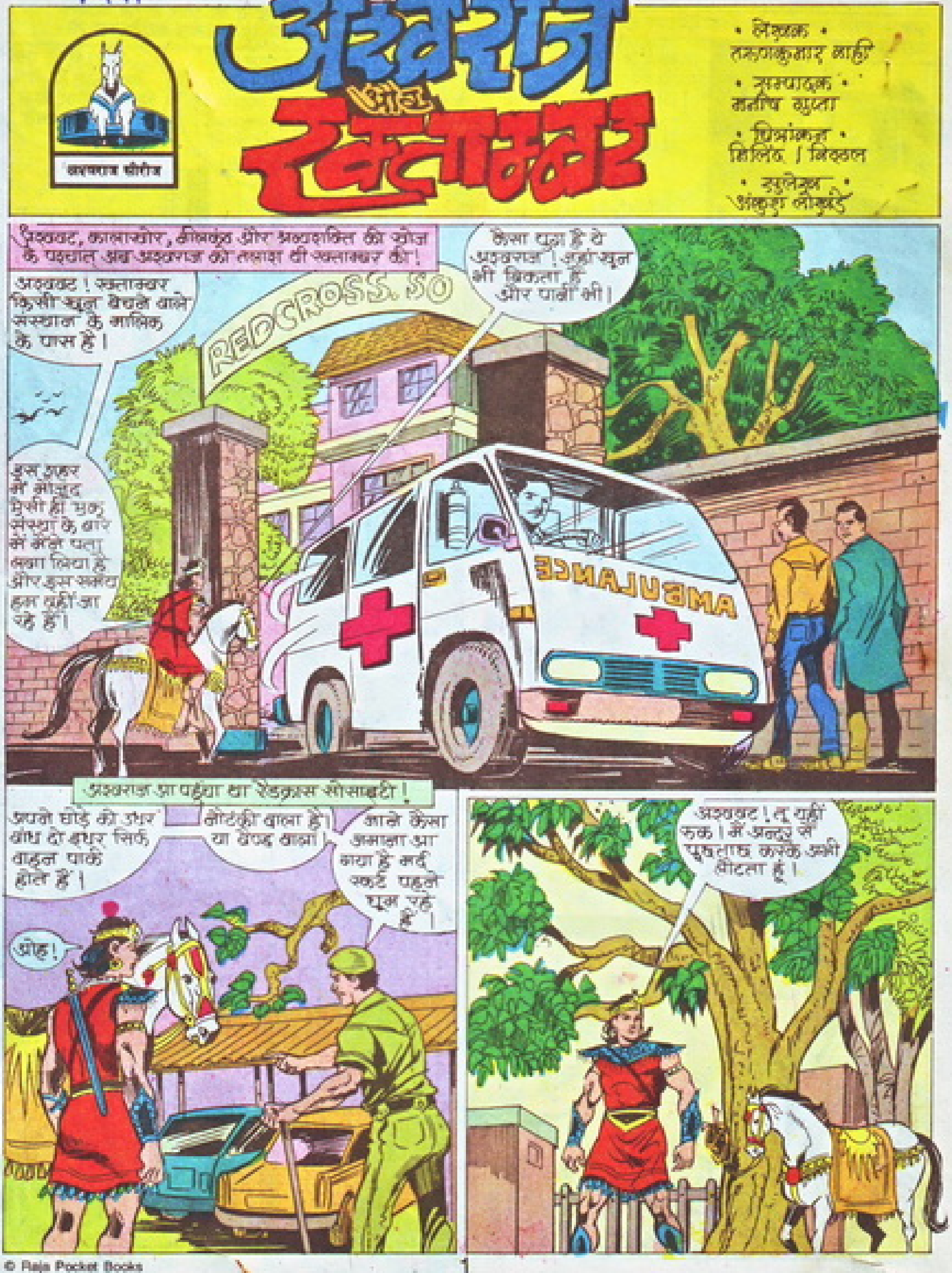


© Raja Pocket Books

अन्दर रक्त दाताओं की भीड़ देखकर चौंक पड़ा अश्वराज–
यहां क्या हो रहा है?
अपनी उत्सुकता को शांत करने के लिए अश्वराज पहुंचा पूछताछ काउंटर पर तो–
ये सभी रक्तदान कर रहे हैं और दान किया हुआ ये रक्त रोगियों, गंभीर रूप से घायल और जरूरतमंद लोगों को चढ़ाया जायेगा।
ओह! ये तो एक नेक काम है तो फिर वो लोग कौन हैं जो रक्त बेचते हैं!
अश्वराज को ब्लड बैंक और रक्तदान के विषय पर मिली कई महत्वपूर्ण जानकारियां और तब–
मैं भी अपना कुछ रक्तदान करना चाहता हूं!
क्यों नहीं! हम अभी तुम्हारा ब्लड टैस्ट करते हैं।
और अश्वराज का ब्लड टैस्ट करती आश्चर्य से उछल पड़ी लैब टैक्नीशियन।
ओह नो! ये...ये तो हैरतअंगेज है! इस व्यक्ति का खून इन्सानों के खून से मेल नहीं खाता! इट्स अमेजिंग!
अरे! कहां गया वो... अश्वराज... हां अश्वराज! यही नाम बताया था उसने अपना।

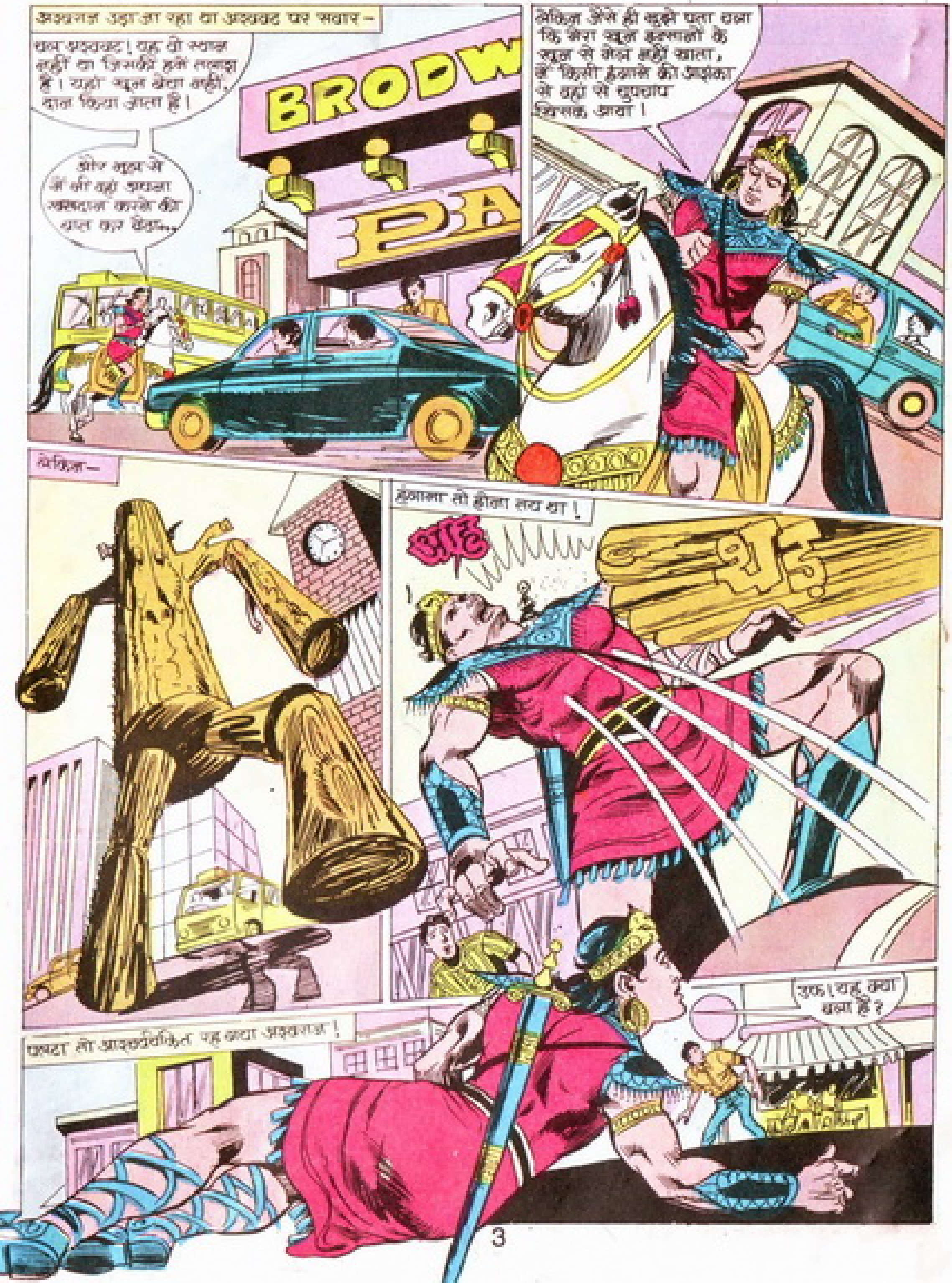
अश्वराज उड़ा जा रहा था अश्वबद पर सवार –
चल अश्वबद! यह वो स्थान नहीं था जिसकी हमें तलाश है। यहां खून बेचा नहीं, दान किया जाता है।
और खुद से मैं भी वहां अपना रक्तदान करने की बात कर बैठा...
BRODW
PA
लेकिन जैसे ही मुझे पता लगा कि मेरा खून इन्सानों के खून से मेल नहीं खाता, मैं किसी हंगामे की आशंका से वहां से चुपचाप खिसक आया।
लेकिन –
हंगामा तो होना तय था!
आह
धड़
पलटा तो आश्चर्यचकित रह गया अश्वराज!
उफ! यह क्या हुआ है?

चलते-फिरते किसी पेड़ का ठूंठ अगर इस प्रकार सामने आ जाए तो कोई भला क्या करे।
RAJ TOWERS
चलता-फिरता पेड़!
सीधा सीधा शिकार बचाकर ही दौड़ाता हूं ट्रक को यहां से।
पेड़ का भूत!
RAJ
FAST-FOOD
इसका शिकार केवल मैं हूं। या...

उठकर खड़ा ही हुआ था अश्वराज कि ठूंठ की जबरदस्त ठोकर से पुनः उछल पड़ा वह—
ओफ्फ!
इसने दूसरा वार भी मुझ पर ही किया!
ठूंठ के शक्तिशाली हाथ का प्रहार हुआ अश्वराज पर लेकिन—
तीसरा वार! ये मेरे पीछे क्यों पड़ा है?
इस बार अश्वराज ने उसके वार को अपने हाथों पर रोका व रखा ठूंठ के हाथ उसका रोका उड़ा देते—
अब यह सिद्ध हो गया है कि इसका निशाना सिर्फ मैं हूं!
ठूंठ के दूसरे हाथ के वार से बच न सका अश्वराज—
आखिर कौन है ये? उफ?
किसी अनहोनी की आशंका से भगदड़ मच गई सड़क पर—
पेड़ का भूत आ गया! भागो!
इसके हाथों जैसे हाथपांव कुचल डालेंगे सबका!

अश्वराज भी अपनी सम्पूर्ण शक्ति एकत्रित करके टूट पड़ा ठूंठ पर—
बड़ा विचित्र सा जन्तु है। जीव है या कोई वृक्ष है।
उफ, घोड़ा होकर किस समझदारी से ठूंठ पर वार कर रहा है ये। उफ!
ठूंठ की शक्ति के आगे तिनके सा उड़ा अश्वराज—
ऐसे घोड़े को इन्सानों की तरह चीखते देखा।
आह!
अश्वराज! तू इस शैतान से दूर रह।
इससे मुझे ही निबटना है।
ठूंठ ने इसी पल आकाश की ओर हाथ उठाकर अजीब सी हुंकार भरी—
क्वॉऽऽक
हुंकार की प्रतिक्रिया हुई आकाश में विचरते उन बाजों पर—
क्वैंक...
क्वैंक...
ठूंठ के संकेत पर ये बाज एकाएक ही उड़ कर धावा कर नीचे आ रहे हैं।
क्वैंक...

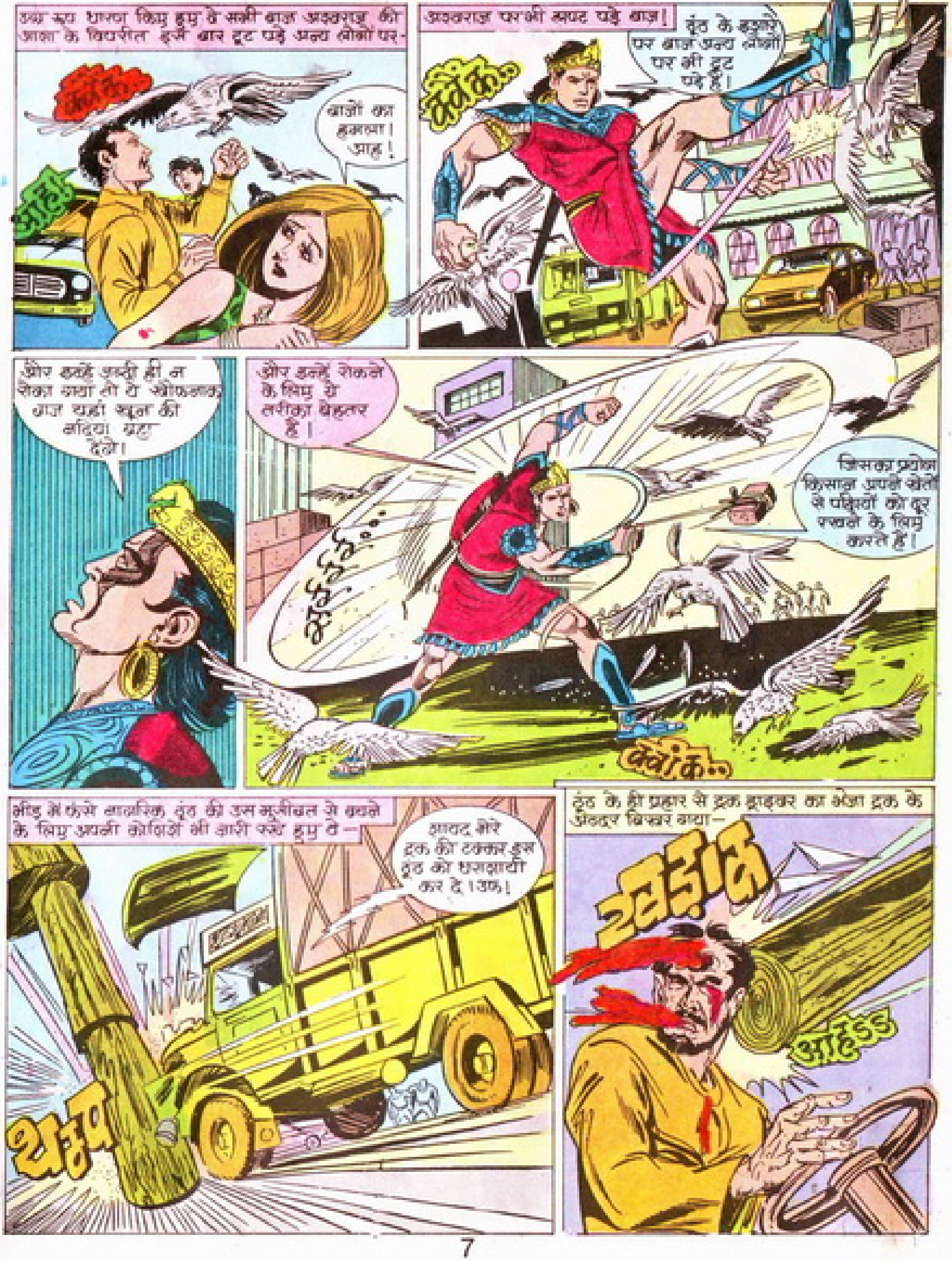
छद्म रूप धारण किए हुए ये सभी बाज अश्वराज की आज्ञा के विपरीत इसी बार टूट पड़े अन्य लोगों पर—
बाजों का हमला! आह!
आह!
अश्वराज पर भी झपट पड़े बाज!
ठूंठ के इशारे पर बाज अन्य लोगों पर भी टूट पड़े हैं!
और इन्हें जल्दी ही न रोका गया तो ये खौफनाक आज यहां खून की नदियां बहा देंगे।
और इन्हें रोकने के लिए ये तरीका बेहतर है।
जिसका प्रयोग किसान अपने खेतों से पक्षियों को दूर रखने के लिए करते हैं।
क्वांक..
भीड़ में फंसे नागरिक ठूंठ की उस मुसीबत से बचने के लिए अपनी कोशिशें भी जारी रखे हुए थे—
शायद मेरे ट्रक की टक्कर इस ठूंठ को धराशायी कर दे। उफ!
ठूंठ के ही प्रहार से ट्रक ड्राइवर का भेजा ट्रक के अन्दर बिखर गया—
खड़ाक
आहेऽऽ

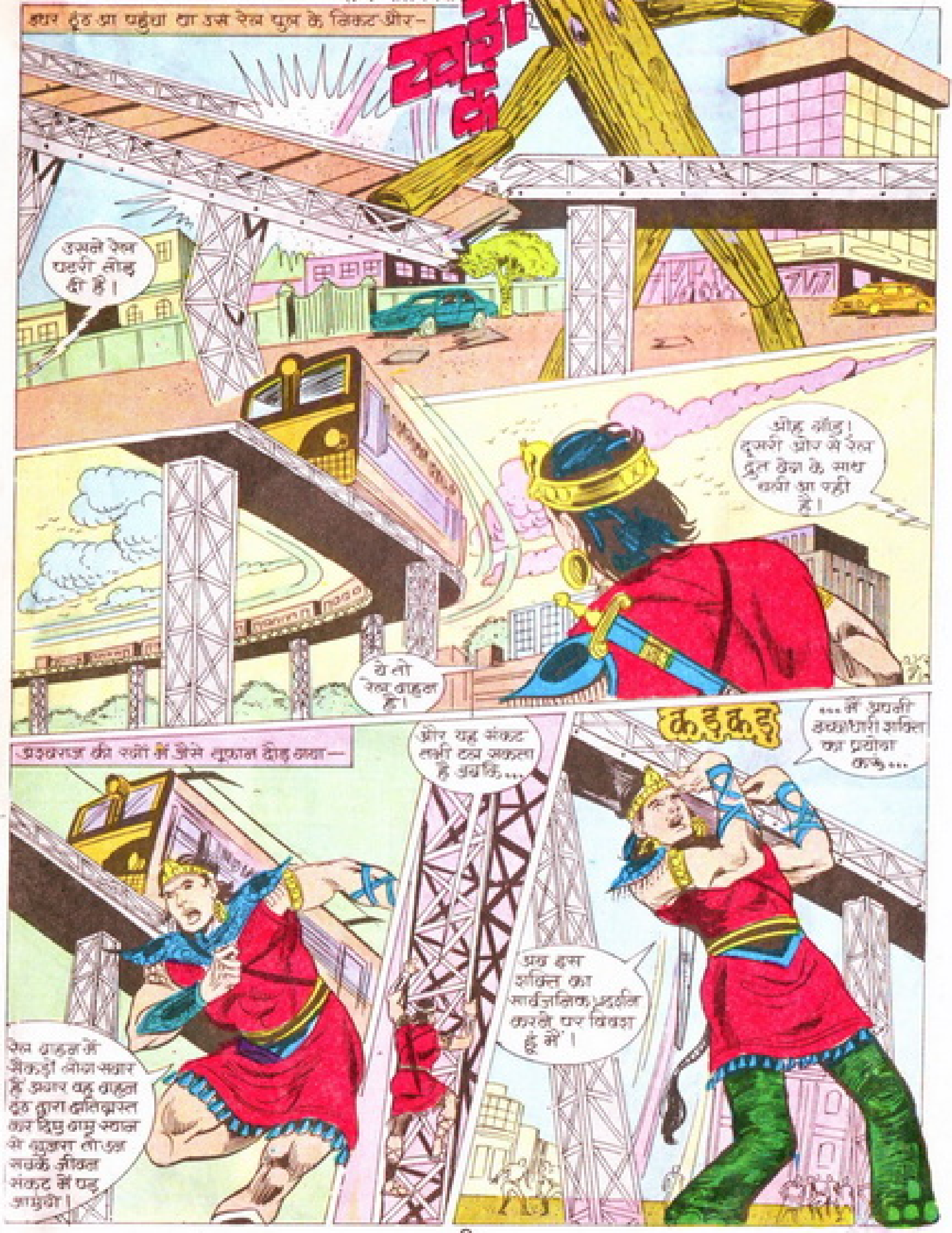
इधर ठूंठ आ पहुंचा था उस रेल पुल के निकट और—
उसने रेल पटरी तोड़ दी है।
ओह नोह! दूसरी ओर से रेल द्रुत वेग के साथ चली आ रही है।
ये तो रेल वाहन है।
अश्वराज की रगों में जैसे तूफान दौड़ गया—
रेल वाहन में सैकड़ों लोग सवार हैं अगर यह वाहन ठूंठ द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिए गए स्थान से गुजरा तो उन सबके जीवन संकट में पड़ जाएंगे।
और यह संकट नहीं टल सकता है जबकि...
कड़कड़
...मैं अपनी अश्वधारी शक्ति का प्रयोग करूं...
पर इस शक्ति का सार्वजनिक प्रदर्शन करने पर विवश हूं मैं।

धड़धड़ाती हुई चली गई ट्रेन–
मेरा प्रयास सफल रहा!
इधर ठूंठ भी आगे बढ़ता चला गया–
मेरा प्रयास सफल हो गया।
रेल पटरी पर से गुजरने के बाद अश्वराज अपने वास्तविक रूप व आकार में परिवर्तित हुआ ही था कि–
सारी तबाही की जड़ यही है। यह रहस्यमय ठूंठ इसी को मारना चाहता था।
ये भी शैतान है और इसका घोड़ा भी! मैंने इसके घोड़े को इन्सानों की तरह बोलते सुना था!
मारो इसे! ये जीवित रहा तो शहर पर पता नहीं अब कौन-सी मुसीबत टूट पड़ेगी।
इसका खौफनाक रूप मुझे अभी भी नहीं भूला!
अश्ववट अश्वराज की ढाल बनकर उसके सामने आ गया–
अश्वराज! अश्ववट के रहते एक भी पत्थर तुम तक न पहुंच पायेगा! जल्दी करो अश्वराज! मेरी पीठ पर सवार हो जाओ!
नहीं ठहरो! रुको!
बोलने वाला घोड़ा शैतान का साथी!
मारो! इसे भी! उफ!

फन्दे में जकड़ी गयी अश्ववट की गर्दन –
बांध दो इसे।
पत्थरों से घायल होते अश्वराज को भी जकड़ दिया गया उस खम्बे से –
इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग हानिकारक रहा मेरे लिए। किंतु मैं विवश था इस शक्ति के प्रयोग के लिए।
अश्वराज का खून देखकर अत्यधिक उत्तेजित हो उठा था अश्ववट और रस्सी तुड़ाने के बाद वह टूट पड़ा उन लोगों पर –
अश्वराज शैतान नहीं है। शैतान तो तुम लोग हो, जो अश्वराज की भलाई का बदला बुराई से दे रहे हो।
अश्ववट! रुक जा। उन्हें मत मार।
और तभी दो नन्हें हाथ जुट गए अश्वराज की रस्सी खोलने में –
तुम?
हाँ, अश्वराज मैं विद्युत कुमार जो स्कूल की ओर से यहां गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने आया था और लौटते समय तुम्हें उस अजीबो-गरीब शैतान से लड़ता देख मैं बस से उतर आया..
बुरी तरह से चौंक उठा था अश्वराज विद्युतकुमार को देखकर –
विद्युतकुमार के विषय में जानने के लिए पढ़ें: 'कलयुग'
अश्ववट! इधर आ अश्ववट!
विद्युतकुमार!

अश्ववट पर सवार हो चले अश्वराज और विपुलकुमार—
चलो अश्ववट!
ढूंढो सी वह राक्षसी आकृति कहां गई?
पुलिस के सायरनों की परवाह न करते हुए सरपट वहां से दौड़ पड़ा था अश्ववट!
तभी सनसनाती हुई सोडा वाटर की वह बोतल सीधी विपुलकुमार के सिर पर आकर फूटी—
विपुलकुमार!
छनाक
आह...
उधर खून से चेहरा व कमीज तरबतर होते चले गए थे विपुलकुमार के—
आह! अश्वराज! मेरा सिर चकरा रहा है। मेरी आंखों के आगे... अंधेरा... आह!
तुम्हें कुछ हो गया तो अश्वराज कभी अपने आप को क्षमा नहीं कर पायेगा विपुलकुमार!
मुझे यहां के किसी वैद्यराज का पता बताओ विपुलकुमार, ताकि मैं तुम्हारे उपचार के लिए तुम्हें वहां ले जाऊं
...वैद्य नहीं होते... यहां डाक्टर होते हैं। आह! अस्पताल!
बेहोश हो गया विपुलकुमार—
अश्ववट! जल्दी कर! खून बहुत बह रहा है। विपुलकुमार को तुरन्त अ... अस्पताल ले जाना होगा...
अस्पताल!

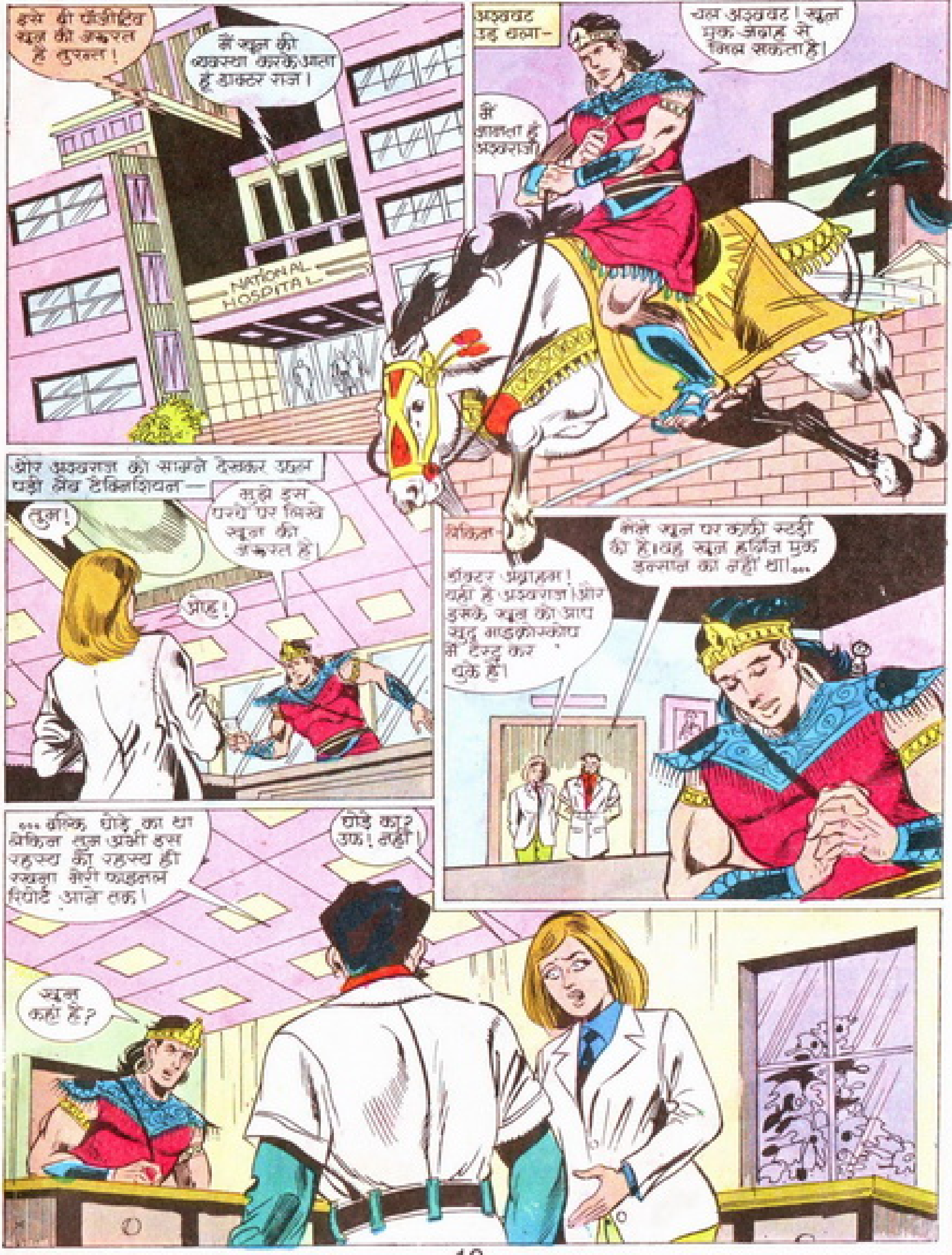
इसे भी पॉजीटिव खून की जरूरत है तुरन्त!
मैं खून की व्यवस्था करके आता हूं डाक्टर राज।
अश्वचर उड़ चला–
चल अश्वचर! खून एक जगह से मिल सकता है।
मैं जानता हूं अश्वराज!
और अश्वराज को सामने देखकर उछल पड़ी लैब टैक्नीशियन–
तुम!
मुझे इस पर्चे पर लिखे खून की जरूरत है।
ओह!
लेकिन–
मैंने खून पर काफी स्टडी की है। वह खून हर्गिज एक इंसान का नहीं था...
डॉक्टर अब्राहम! यही है अश्वराज! और इसके खून को आप खुद माइक्रोस्कोप से टैस्ट कर चुके हैं।
...बल्कि घोड़े का था लेकिन तुम अभी इस रहस्य को रहस्य ही रखना मेरी फाइनल रिपोर्ट आने तक!
घोड़े का? उफ! नहीं!
खून कहाँ है?

मुझे डाक्टर अब्राहम कहते हैं अश्वराज।
यहां रेडक्रास से खून देने की कुछ शर्तें होती हैं जिनके कारण तुम्हें यहां खून नहीं मिल सकता...
लेकिन यहां तो खून दान में लिया और दिया जाता है।
जरूर। लेकिन यहां खून के बदले खून दिया जाता है। यहां खून का कारोबार नहीं होता। फिर इस समय इस ग्रुप का खून यहां मौजूद नहीं है।
मगर तुम घबराओ मत तुम्हें तुम्हारे मतलब का खून मैं दूंगा।
बैठो!
मगर अश्वराज!
ओह! तुम्हारा घोड़ा, ठीक है तुम मेरी कार के पीछे अपने घोड़े पर आओ!
शीघ्र ही—
ये मेरा ब्लड बैंक है जहां मैं खून का कारोबार करता हूं।
ओह!
रक्ताम्बर भी तो ऐसे ही किसी खून के व्यापारी के पास है।
और भीतर उस स्थान पर पहुंचते ही आश्चर्य के साथ चीख पड़ा अश्वराज—
र.... रक्ताम्बर!

पागलों की तरह रक्ताक्खर से लिपट गया अश्वराज।
रक्ताक्खर! तेरी तलाश में कहाँ-कहाँ नहीं भटका मैं।
उफ! तुझे अचानक सामने देखकर तू नहीं जानता कि मुझे कितनी प्रसन्नता हो रही है।
लेकिन तू कुछ बोल क्यों नहीं रहा रक्ताक्खर?
??
ओह! इसका मतलब तू अभी तक सम्मोहन से बंधा हुआ है!
लेकिन... लेकिन तेरी ये हालत किस दुष्ट ने की है रक्ताक्खर?
कहर आँखों में लिए पलटा अश्वराज—
तुमने?
हां, क्योंकि मैं घोड़ों के खून में कुछ ऐसे तत्वों की खोज में लगा हुआ था जिन्हें अगर इन्सानी खून में प्रविष्ट करा दिया जाए तो इन्सान में भी हॉर्स पावर यानी घोड़ों की सी शक्ति उत्पन्न हो जाए...
और ये घोड़ा तो इन तत्वों के मामले में बहुत आश्चर्यजनक परिणाम देने वाला निकला।

मेरा यह प्रयोग लगभग सफलता के निकट है।
क्योंकि, आज मैं रेसकोर्स सोसाइटी की उसी इमारत से ढाई किंग रक्त की कई थैलियों से घोड़े के खून के वे तत्व मिला आया हूं।
अब अब तो खून इन्सानों को चढ़ाया जायेगा तो मेरी सफलता या असफलता का पता लग जायेगा वैसे चूहों और बन्दरों पर मेरा प्रयोग सफल हुआ है।
चीं चीं
और अब तुझे मैं यहां इसलिए लाया हूं क्योंकि तुम्हारे खून में मौजूद तत्व तो इस आश्चर्य-जनक घोड़े से भी बढ़कर परिणाम देने वाले हैं।
अब तुम यहां से वापस नहीं आ सकते अश्वराज!
ओह! नहीं!
अश्वराज जकड़ा गया उन बंधनों में—
तुझे एक मासूम की जान बचाने के लिए रक्त की फौरन जरूरत है डाक्टर अब्राहम! याद रख अगर उसे कुछ भी हुआ तो मैं तुझे भी छोड़ूंगा नहीं!
खून तो इस रेफ्रिजरेटर में बहुत है अश्वराज! लेकिन मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता।

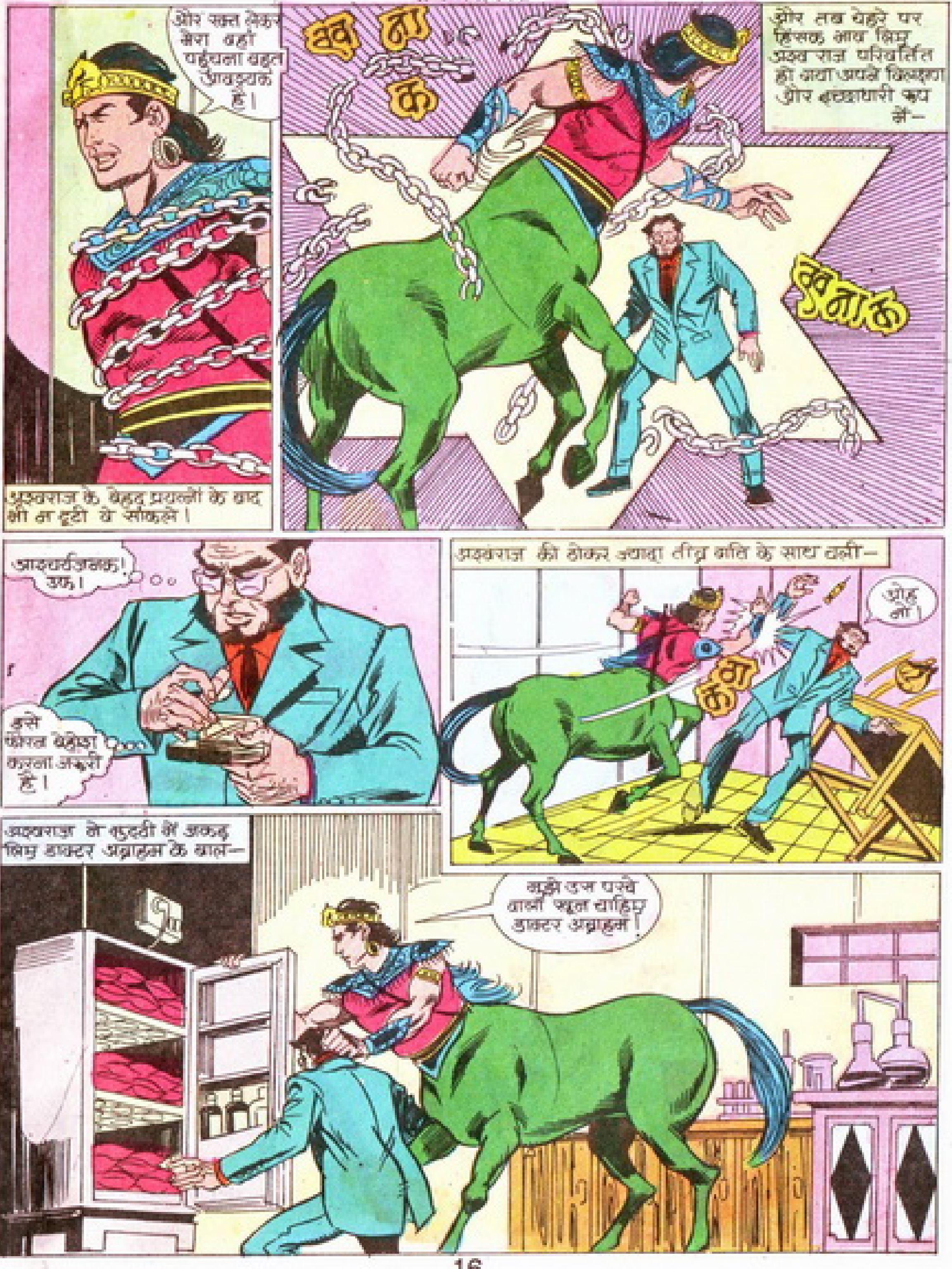
और रक्त लेकर मेरा वहाँ पहुँचना बहुत आवश्यक है।
ख ना क
और तब चेहरे पर हिंसक भाव लिए अश्वराज परिवर्तित हो गया अपने विलक्षण और अश्वधारी रूप में—
खनाक
अश्वराज के बेहद प्रयत्नों के बाद भी न टूटी वे सांकलें।
आश्चर्यजनक! उफ।
इसे फौरन बेहोश करना जरूरी है।
अश्वराज की ठोकर ज्यादा तीव्र गति के साथ चली—
ओह माँ!
अश्वराज ने मुट्ठी में जकड़ लिए डाक्टर अब्राहम के बाल—
मुझे उस पशु वाला रक्त चाहिए डाक्टर अब्राहम!

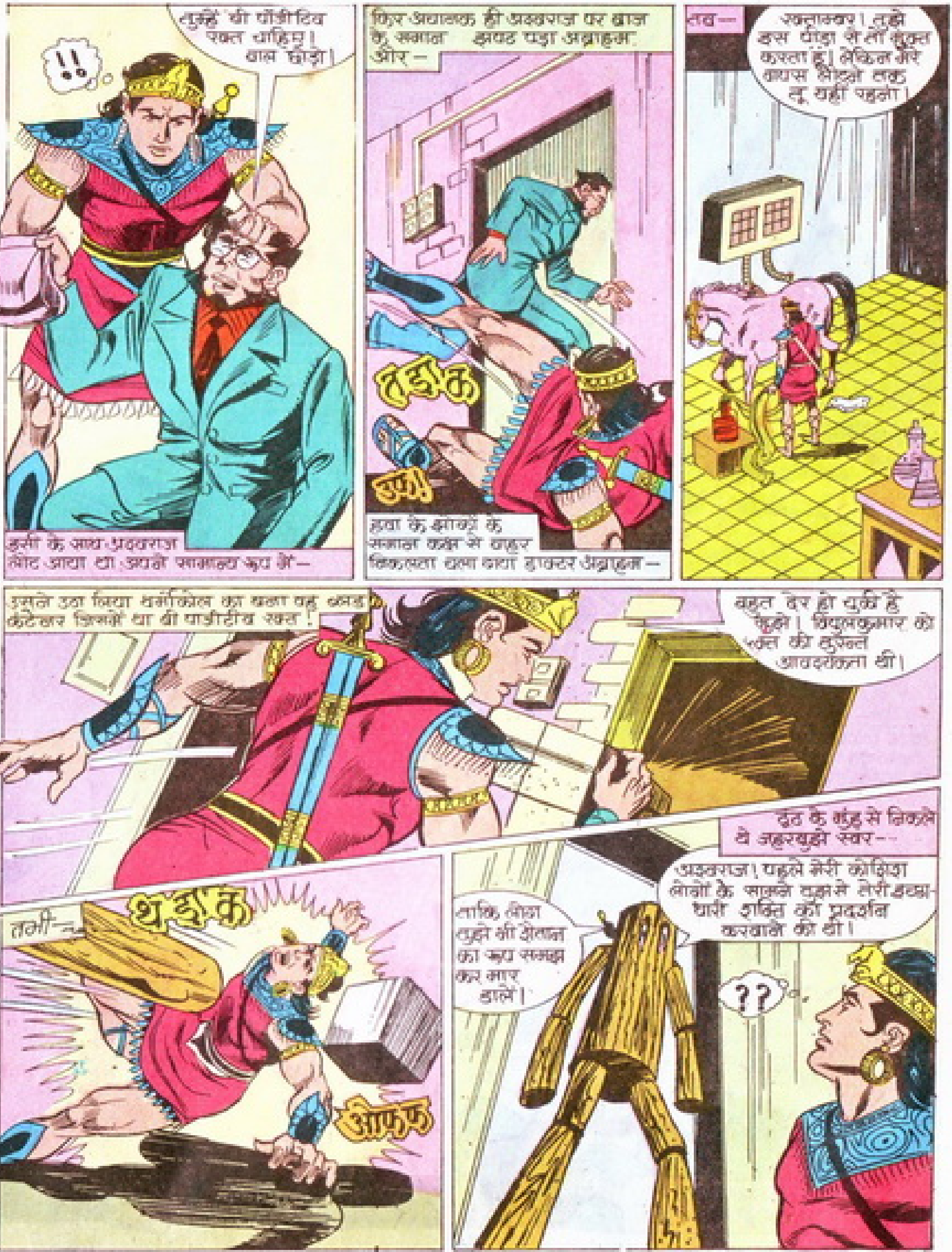
!!
तुम्हें भी पौष्टिक रक्त चाहिए! बाल छोड़ो!
इसी के साथ अश्वराज लौट आया था अपने सामान्य रूप में—
फिर अचानक ही अश्वराज पर बाज के समान झपट पड़ा अब्राहम और—
धड़ाक
उफ!
हवा के झोंके के समान कक्ष से बाहर निकलता चला गया डाक्टर अब्राहम—
तब—
रक्ताम्बर! तुझे इस पीड़ा से तो मुक्त करता हूँ। लेकिन मेरे वापस लौटने तक तू यहीं रहना!
इसने उठा लिया थर्मोकोल का बना वह अनाड़ कटेचर जिसमें था वो पौष्टिक रक्त!
बहुत देर हो चुकी है मुझे। विपुलकुमार को खून की तुरन्त आवश्यकता थी।
तभी—
धड़ाक
ओफ्फ
ठूंठ के मुंह से निकले ये जहरबुझे स्वर—
अश्वराज! पहले मेरी कोशिश लोगों के सामने तुझसे तेरी अश्व-धारी शक्ति का प्रदर्शन करवाने की थी।
ताकि लोग तुझे भी शैतान का रूप समझ कर मार डालें।
??

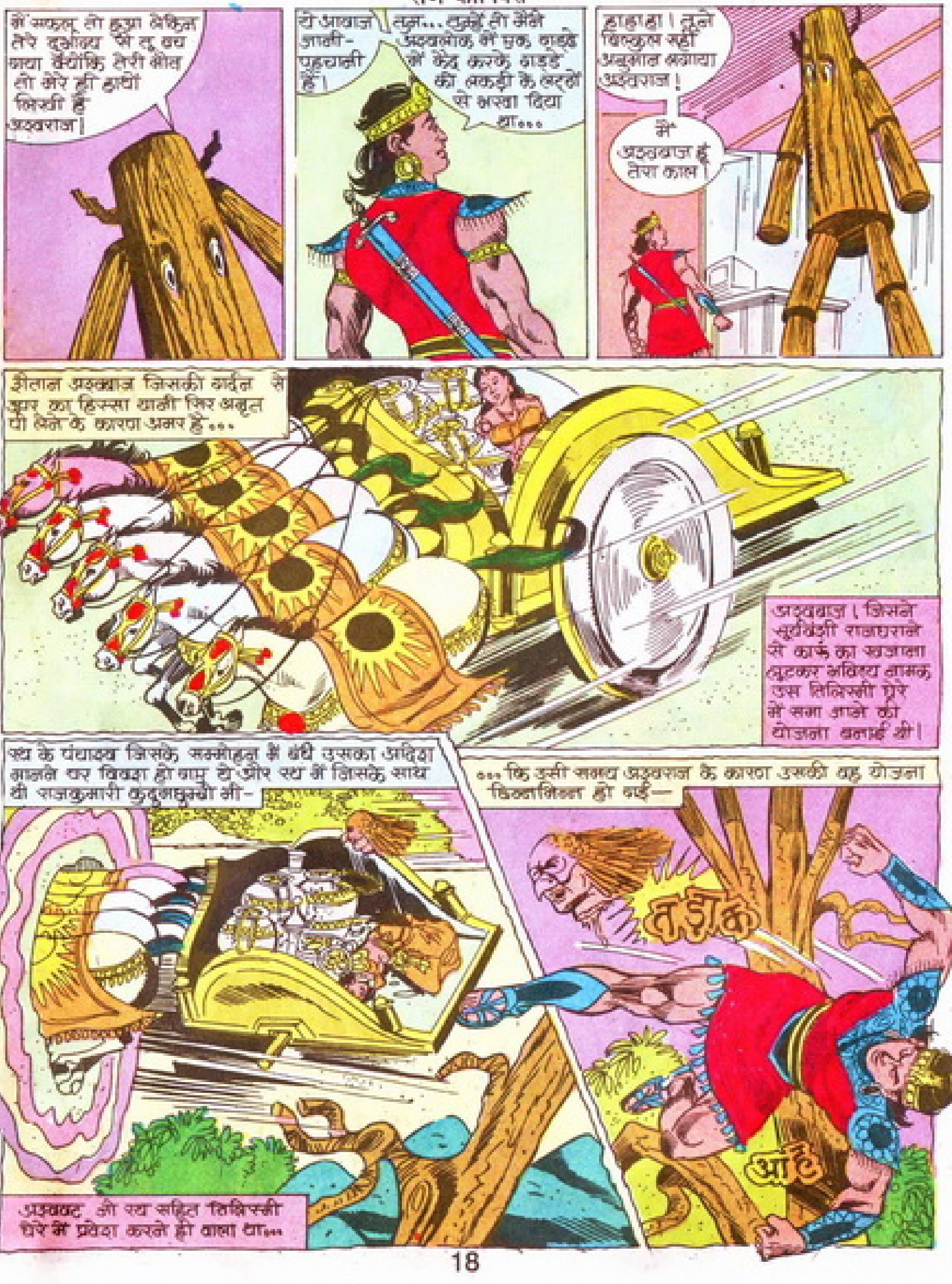
मैं सफल तो हुआ लेकिन तेरे दुर्भाग्य से तू बच गया क्योंकि तेरी मौत तो मेरे ही हाथों लिखी है अश्वराज!
ये आवाज जानी-पहचानी है।
तुम... तुम्हें तो मैंने अश्वलोक में एक गड्डे में कैद करके गड्डे की लकड़ी के लट्ठों से भरवा दिया था...
हाहाहा! तूने बिल्कुल सही अनुमान लगाया अश्वराज!
मैं अनवाज हूँ तेरा काल!
शैतान अनवाज जिसकी करतूत से सुर का हिस्सा खाली फिर अमृत पी लेने के कारण अमर है...
अनवाज! जिसने सूर्यवंशी राजघराने से कारूं का खजाना लूटकर भविष्य नामक उस तिलिस्मी घेरे में समा जाने की योजना बनाई थी।
रथ के पंचाश्व जिसके सम्मोहन में बंधे उसका आदेश मानने पर विवश हो गए थे और रथ में जिसके साथ थी राजकुमारी कुमुदमुखी भी-
...कि उसी समय अश्वराज के कारण उसकी वह योजना छिन्नभिन्न हो गई—
तड़ाक
आह
अनवाज जो रथ सहित तिलिस्मी घेरे में प्रवेश करने ही वाला था...

अश्वराज। तिलस्मी ठोकर से उछलकर अश्वराज का सिर जाकर गिरा उस गहरे कुएं में जिसे अश्वराज ने सैनिकों की मदद से लकड़ी के बड़े-बड़े शहतीरों से भरवा दिया–
अब ये शैतान सिर कभी बाहर न आ पाएगा!
इधर ओझल हो रहा था तिलिस्मी घेरा–
...जिसमें काल के खजाने और कुटुमपुत्री सहित सब पहले ही समा चुका था –
ऐन वक्त पर उछलकर कूद गया अश्वराज भी।
और इधर शैतान अश्वराज का सिर जोकि अमर है अपनी तिलिस्मी आंख के जादू से प्राप्त कर रहा था अपने जिस्म के अंग–
प्रत्येक जीवित वस्तु या प्राणी को मैं अपने शरीर के अंगों के रूप में प्राप्त कर सकता हूं!
और पेड़ भी जीवित की श्रेणी में आते हैं जिनसे बने हैं ये शहतीर!
हा हा हा
मुझे एक सम्पूर्ण व मजबूत जिस्म प्राप्त हो रहा है।
इस प्रकार उस कैद से बाहर निकला अश्वराज।
अश्वराज! मैं आ रहा हूं! अश्वराज! तेरा काल तेरे सिर पर नाच रहा है। हा हा हा।

अपनी अद्भुत शक्ति से उसने पुनः प्रकट किया उस तिलिस्मी घेरे को और —
काष्ठ का खजाना भी भविष्य में है, कुतुमकुम्भी भी और मेरा शत्रु अश्वराज भी।
और अब मैं भी प्रस्थान करता हूँ भविष्य की ओर।
हा हा हा
कहते हुए भयानक भाव आँखों में लिए हँस पड़ा था अश्वराज —
अश्वराज! इस बार मैंने जो जिस्म प्राप्त किया है, उस पर तेरा कोई वार नहीं चलेगा।
अश्वराज वापस डाक्टर अब्राहम की प्रयोगशाला में आ घुसा।
अपने हाथ की जबरदस्त चोट से अश्वराज ने ढहा दिया वह कक्ष —
इस कक्ष के मलबे में दबा कर शत्रु ले लूंगा मैं।
कड़ाक
डाक्टर अब्राहम की प्रयोगशाला मलबे का ढेर बनने लगी-
हिनहीं...
रक्ताक्षर!
लेकिन फिलहाल रक्ताक्षर को देखने का समय नहीं था-
हे अश्वदेव! रक्ताक्षर की रक्षा करना!
इस कक्ष को मलबे का ढेर बनने से बचाने के लिए मुझे इस कक्ष से तुरन्त बाहर आना चाहिए।

अश्वराज के पांव के नीचे आकर नष्ट होता आ रहा था ब्लड कंटेनर।
अश्वराज और उससे संबंधित प्रत्येक वस्तु के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।
लेकिन ठीक वक्त पर अश्वराज उठा ले गया उस कंटेनर को –
यह खून बहुत कीमती है शैतान अश्वराज। यह खून किसी को जीवन दे सकता है।
धम्म
अश्वदंट। संभालो इसे। इसमें विद्युत-कुमार के लिये खून है।
ओह! ये शैतान यहां भी आ पहुंचा।

उस दृश्य के कारण बाहर सड़क पर मच गई सनसनी—
ओह गॉड! यह क्या बला है?
पुलिस को फोन करो!
इधर अश्वराज के मस्तिष्क में अश्वराज से निपटने के लिए कौंधा एक विचार!
अग्नि! इसके काठ के शरीर को अग्नि से नष्ट किया जा सकता है।
अग्नि!
तब अश्वराज ने खींच दी अपनी तलवार —
इसके काठ के शरीर पर मेरे प्रहारों का असर नहीं होगा लेकिन इसकी इसकी आँखों पर प्रहार करने में शायद मैं सफल हो जाऊं।
लेकिन अश्वराज कम होशियार नहीं था उसने अश्वराज के इरादे को भांप लिया और—
यूं तो मेरा सिर अमर है अश्वराज लेकिन तेरी तलवार मेरी आंख में चुभती तो दर्द सहना ही पड़ता।
ठक
अश्वराज! बड़ा अजीब सा नाम है इसका मगर बहादुर दिखाई पड़ रहा है ये।
अश्वराज! यह लो इस टंकी में अत्यन्त ज्वलनशील पेट्रोल है। इसे ठूंठ पर छिड़क दो।

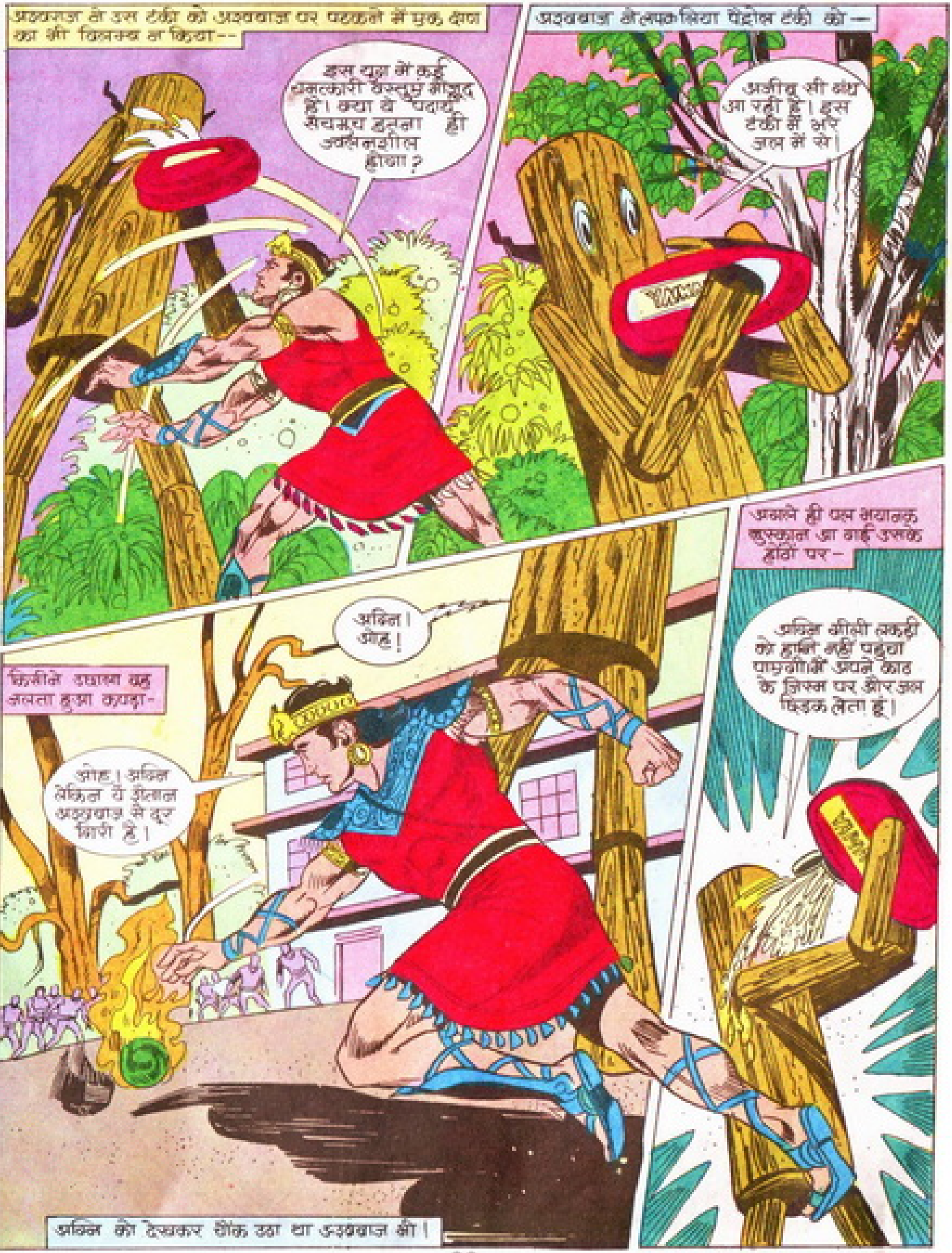
अश्वराज ने उस टंकी को अश्वराज पर पटकने में एक क्षण का भी विलम्ब न किया--
इस युद्ध में कई चमत्कारी वस्तुएं मौजूद हैं। क्या ये पदार्थ सचमुच इतना ही ज्वलनशील होगा?
अश्वराज ने लपक लिया पेट्रोल टंकी को —
अजीब सी गंध आ रही है। इस टंकी में भरे जल में से।
किसी ने उछाला वह जलता हुआ कपड़ा-
अग्नि! ओह!
ओह! अग्नि लेकिन ये ज्वाला अश्वराज से दूर गिरी है।
अचानक ही एक भयानक मुस्कान आ गई उसके होंठों पर-
अग्नि गीली लकड़ी को हानि नहीं पहुंचा पाएगी मैं अपने काठ के जिस्म पर और अब छिड़क लेता हूं।
अग्नि को देखकर चौंक उठा था अश्वराज भी।

अब अश्वराज ने रुख किया ठूंठ की ओर—
अश्वराज! जिसे तू इस समझकर अपना जिस्म ढीला कर रहा है...
...वह दरअसल भविष्य का अत्यन्त ज्वलनशील ईंधन है जिसका इस्तेमाल यहाँ के वाहनों को चलाने के लिए किया जाता है।
ओहऽऽ नहींऽऽ
मेरा पूरा जिस्म आग की लपटों में घिर गया है।
धड़ाम से नीचे आ गिरी वह ठूंठ—
मेरा यह शरीर भी अश्वराज के कारण जलकर राख हो रहा है।
अब मुझे तुरन्त यह जिस्म भी छोड़ना होगा।

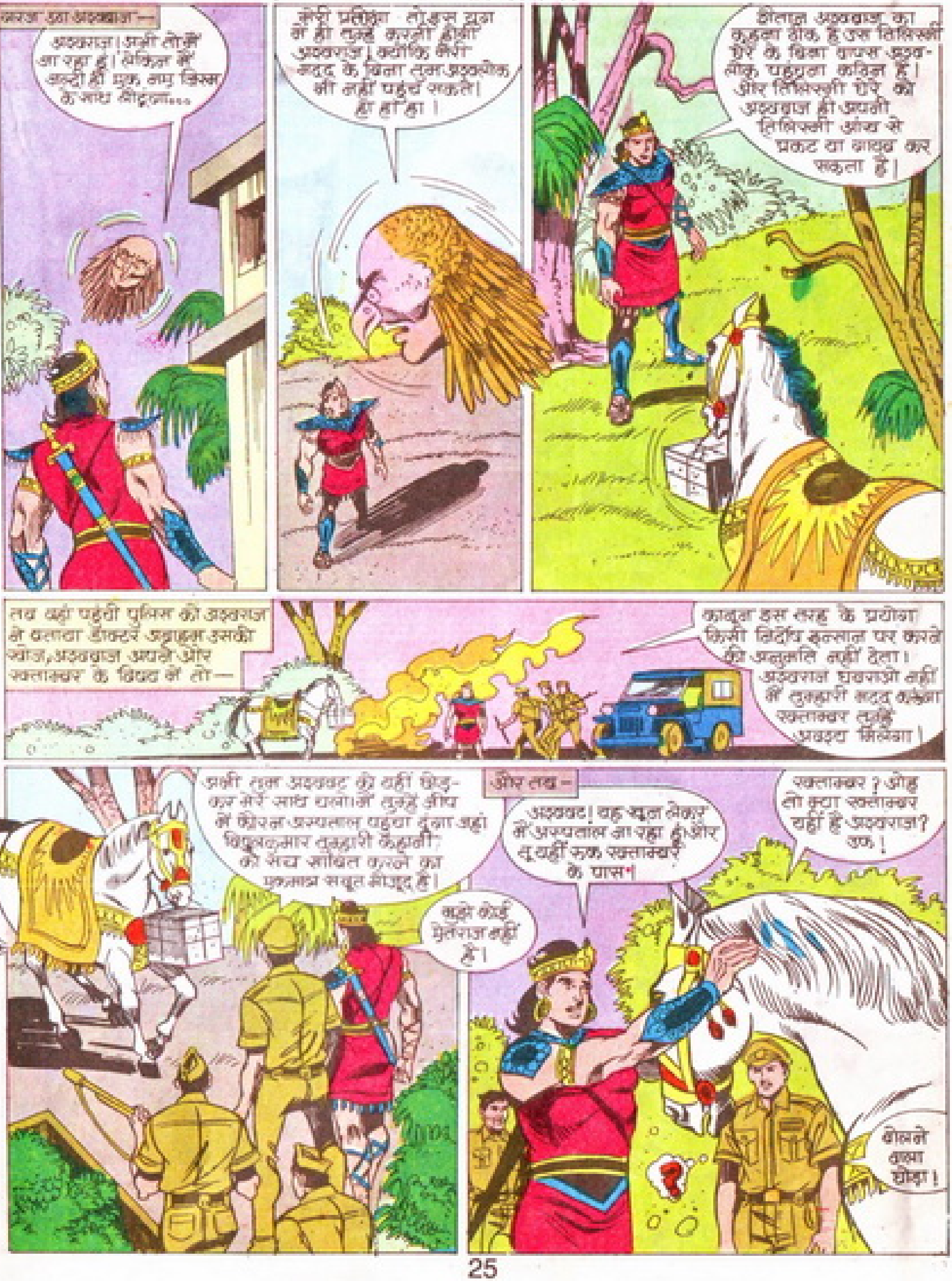
अश्वराज! अभी तो मैं जा रहा हूँ! लेकिन मैं जल्दी ही एक नए जिस्म के साथ लौटूंगा...
मेरी प्रतीक्षा तो तुम युगों से ही करोगे अश्वराज! क्योंकि मेरी मदद के बिना तुम अश्वलोक भी नहीं पहुँच सकते! हा हा हा!
शैतान अश्वराज का कहना ठीक है उस तिलिस्मी हीरे के बिना वापस अश्वलोक पहुँचना कठिन है। और तिलिस्मी हीरे को अश्वराज ही अपनी तिलिस्मी आँख से प्रकट या गायब कर सकता है।
तब वहाँ पहुँची पुलिस को अश्वराज ने बताया डॉक्टर अब्राहम उसकी खोज, अश्वराज अपने और रक्ताम्बर के विषय में तो—
कानून इस तरह के प्रयोग किसी निर्दोष इन्सान पर करने की अनुमति नहीं देता। अश्वराज घबराओ नहीं मैं तुम्हारी मदद करूँगा रक्ताम्बर तुम्हें अवश्य मिलेगा।
अभी तुम अश्वपट को यहीं छोड़कर मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें जीप में फौरन अस्पताल पहुँचा दूँगा जहाँ विनयकुमार तुम्हारी कहानी को सच साबित करने का एकमात्र सबूत मौजूद है।
मुझे कोई ऐतराज नहीं है।
और तब—
अश्वपट! वह सबूत लेकर मैं अस्पताल जा रहा हूँ और तू यहीं रुक रक्ताम्बर के पास।
रक्ताम्बर? ओह तो क्या रक्ताम्बर यहीं है अश्वराज? उफ!
बोलने वाला घोड़ा!

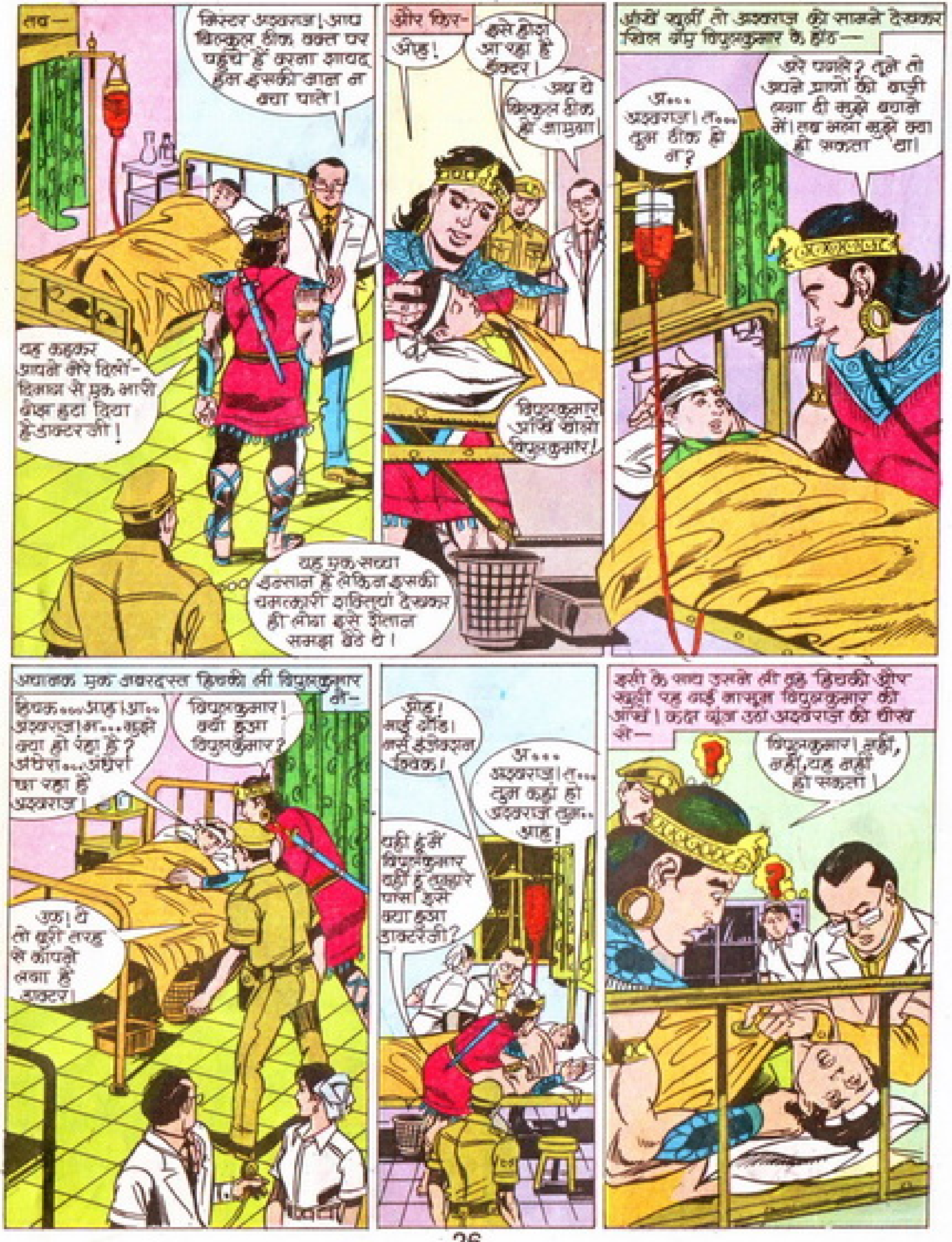
तब—
मिस्टर अग्रराज! आप बिल्कुल ठीक वक्त पर पहुँचे हैं वरना शायद हम इसकी जान न बचा पाते!
यह कहकर आपने मेरे दिलो-दिमाग से एक भारी बोझ हटा दिया है डाक्टर जी!
यह एक सच्चा इन्सान है लेकिन इसकी चमत्कारी शक्तियों देखकर ही लोग इसे शैतान समझ बैठे थे!
और फिर—
ओह!
इसे होश आ रहा है डॉक्टर!
अब ये बिल्कुल ठीक हो जायेगा!
विपुलकुमार! आँखें खोलो विपुलकुमार!
आँखें खुलीं तो अग्रराज को सामने देखकर खिल उठे विपुलकुमार के होंठ—
अ... अग्रराज! त... तुम ठीक हो न?
अरे पगले? तूने तो अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी मुझे बचाने में! तब भला मुझे क्या हो सकता था!
अचानक एक ज़बरदस्त हिचकी ली विपुलकुमार ने—
हिक...आह! आ... अग्रराज! म...मुझे क्या हो रहा है? अंधेरा...अंधेरा छा रहा है अग्रराज!
विपुलकुमार! क्या हुआ विपुलकुमार?
उफ़! ये तो बुरी तरह से काँपने लगा है डाक्टर!
ओह! आई सी। नर्स इंजेक्शन! क्विक!
अ... अग्रराज! त... तुम कहाँ हो अग्रराज तुम.. आह!
यहीं हूँ मैं विपुलकुमार यहीं हूँ तुम्हारे पास! इसे क्या हुआ डाक्टर जी?
इसी के साथ उसने ली एक हिचकी और खुली रह गईं मासूम विपुलकुमार की आँखें! कहीं गूंज उठी अग्रराज की चीख सी—
विपुलकुमार! नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता!

आप तो कह रहे थे डॉक्टर ये अब बिल्कुल ठीक हो जायेगा।
और मैं झूठ नहीं कह रहा था मुझे लगता है यह सारी गड़बड़ खून के कारण हुई है मिस्टर अश्वराज। आप यह खून कहाँ से लाए थे?
और तभी उसी वार्ड में तड़पने लगे दो और पेशेन्ट –
आह!
डाक्टर आह!
देखते ही देखते वे दोनों भी दम तोड़ गए –
खून चढ़ाने के बाद ही इनकी भी यह हालत हुई है उफ! ये भी खत्म हो चुका!
इन्हें दिया गया खून रेडक्रास से मंगाया गया था, सर!
और पांच मौतें हुईं खून चढ़ने से।
इधर आंसुओं को पीकर अकड़े भौंहें बुदबुदा उठा था अश्वराज –
यह सब डाक्टर अग्रवाल के कारण हुआ है। उसी ने खून में कोई प्रयोग किया था। वह हत्यारा मेरे हाथों से अब नहीं बचेगा।
रेडक्रास से मंगाए गए खून को और मरीज़ों को चढ़ाए जाने से रोको डाक्टर, वरना मौत के बाद मौत होगी यहां।
ओह गॉड!

इधर अश्वराज बाहर निकला ही था कि-
अश्वपट! रक्ताक्षर कहाँ है?
उधर देखो अश्वराज!
हिनहिनाऽऽ
रक्ताक्षर! तू ठीक हो गया रक्ताक्षर!
हिनहिन! हाँ, अश्वराज, और मुझे अश्वपट ने खोलकर धारे से खुला दिया है।
घोड़ों की तरह बात केवल अश्वपट ही कर सकता है।
अश्वराज सिर पर मुक्का लगी चोट से उस पर से अश्वराज का सम्मोहन टूट गया था और ये सीधा मेरे पास आ पहुँचा।
अश्वपट! डाक्टर अब्राहम नामक उस हत्यारे के शिकार विपुलकुमार सहित कई लोग हो चुके हैं।
रक्ताक्षर! इस समय अश्वराज को तेरी मदद की जरूरत है मुझे डाक्टर अब्राहम तक पहुँचा दे रक्ताक्षर!
और यह है डाक्टर अब्राहम की तस्वीर जो मेरे मातहत के जरिए अभी अभी मेरे पास पहुँची है।
हिनेन
अश्वराज! रक्ताक्षर डाक्टर अब्राहम को एक तीव्र गति वाहन में बैठ कर उत्तर की ओर जाता देख रहा है।
ओह! तुम अश्वपट पर जाओ अश्वराज! और मैं जीप से तुम्हारे साथ हूँ।
रक्ताक्षर मीलों दूर तक देख सकता है।

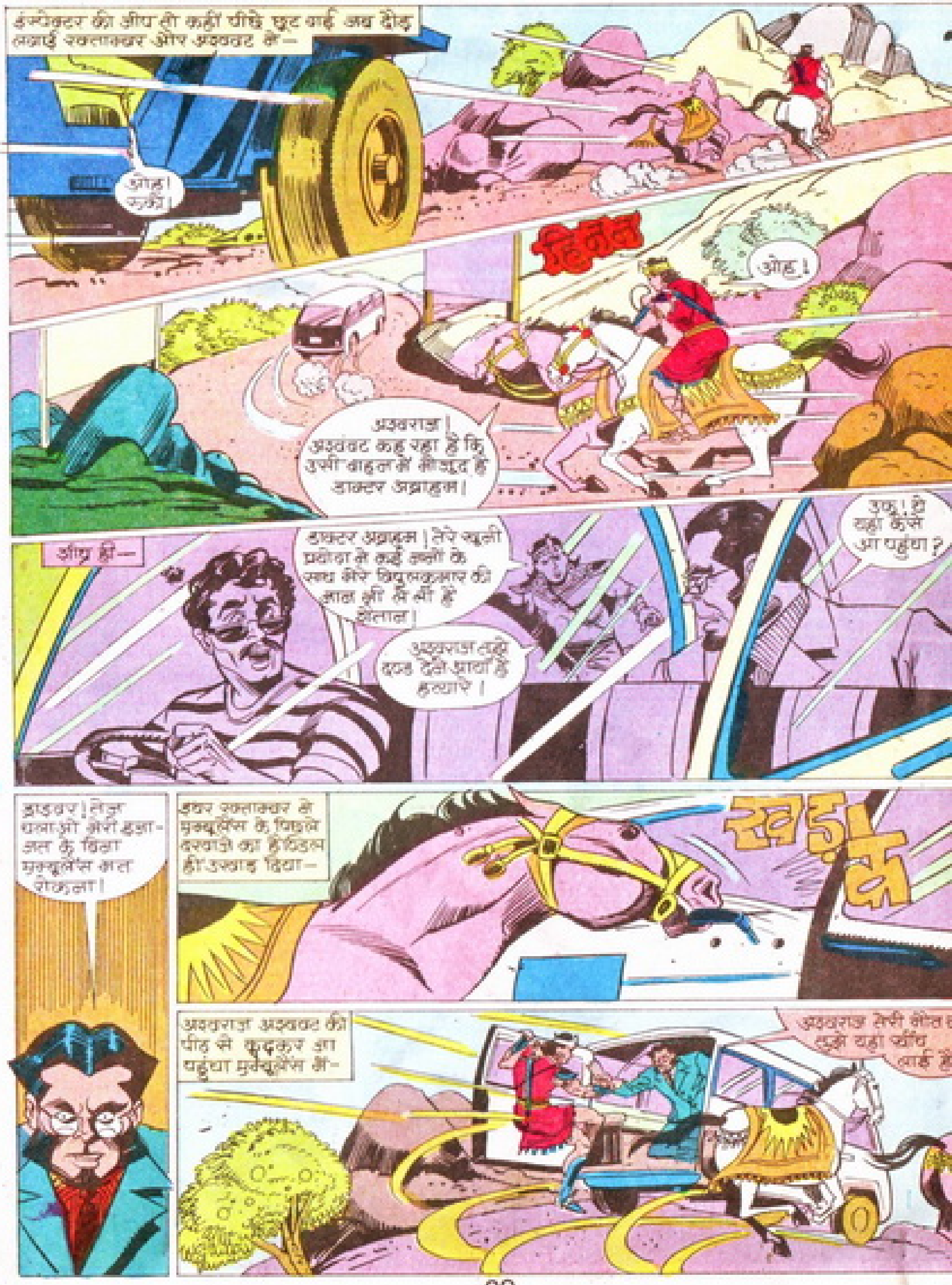
इन्स्पेक्टर की जीप तो कहीं पीछे छूट गई। अब दौड़ लगाई रक्ताम्बर और अश्ववट ने—
ओह! रुकी!
हिनेक
ओह!
अश्वराज! अश्ववट कह रहा है कि उसी वाहन में मौजूद है डाक्टर अब्राहम!
और फिर—
डाक्टर अब्राहम! तेरे ज़हरीले प्रयोग ने कई जानों के साथ मेरे विपुलकुमार की जान भी ले ली है शैतान!
उफ! ये यहां कैसे आ पहुंचा?
अश्वराज तुझे दण्ड देने आया है हत्यारे!
ड्राइवर! तेज़ चलाओ और इस जानवर को पीछे छोड़ दो!
इधर रक्ताम्बर ने एम्बुलेंस के पिछले दरवाज़े का हैंडिल ही उखाड़ दिया—
खड़क
अश्वराज अश्ववट की पीठ से कूदकर आ पहुंचा एम्बुलेंस में—
अश्वराज तेरी मौत ही तुझे यहां खींच लाई है

अश्वराज के एक ही झटके से डाक्टर अब्राहम भीतर रखे स्ट्रेचर पर आ गिरा–
ओह!
डाक्टर ज़िन्दगी देते हैं लेकिन विद्युत्कुमार का हत्यारा बन गया तू डाक्टर अब्राहम!
ऊबड़खाबड़ सड़क पर तेज़ी से आगे बढ़ती रही एम्बुलैंस–
अब तक अश्वराज का आदेश न मिले आप हम इस वाहन को रोकने की चेष्टा नहीं कर सकते।
BE HAPPY
अश्वराज ने अपने घूंसे की चोटों से लहू से लाल कर दिया डाक्टर अब्राहम का चेहरा–
आह! नहीं! मुझे जाने दो अश्वराज!
धम्म
और तभी डाक्टर अब्राहम के हाथ पड़ गया सीक्रेट स्प्रे–
फस्ऽऽय
ओह! नहीं! यह कैसे शस्त्र का वार किया इसने मुझ पर?
लेकिन तभी एम्बुलैंस को लगे झटके से स्ट्रेचर सहित बाहर सड़क पर आकर ढलान पर फिसलता चला गया डाक्टर अब्राहम–
आह! नहीं!

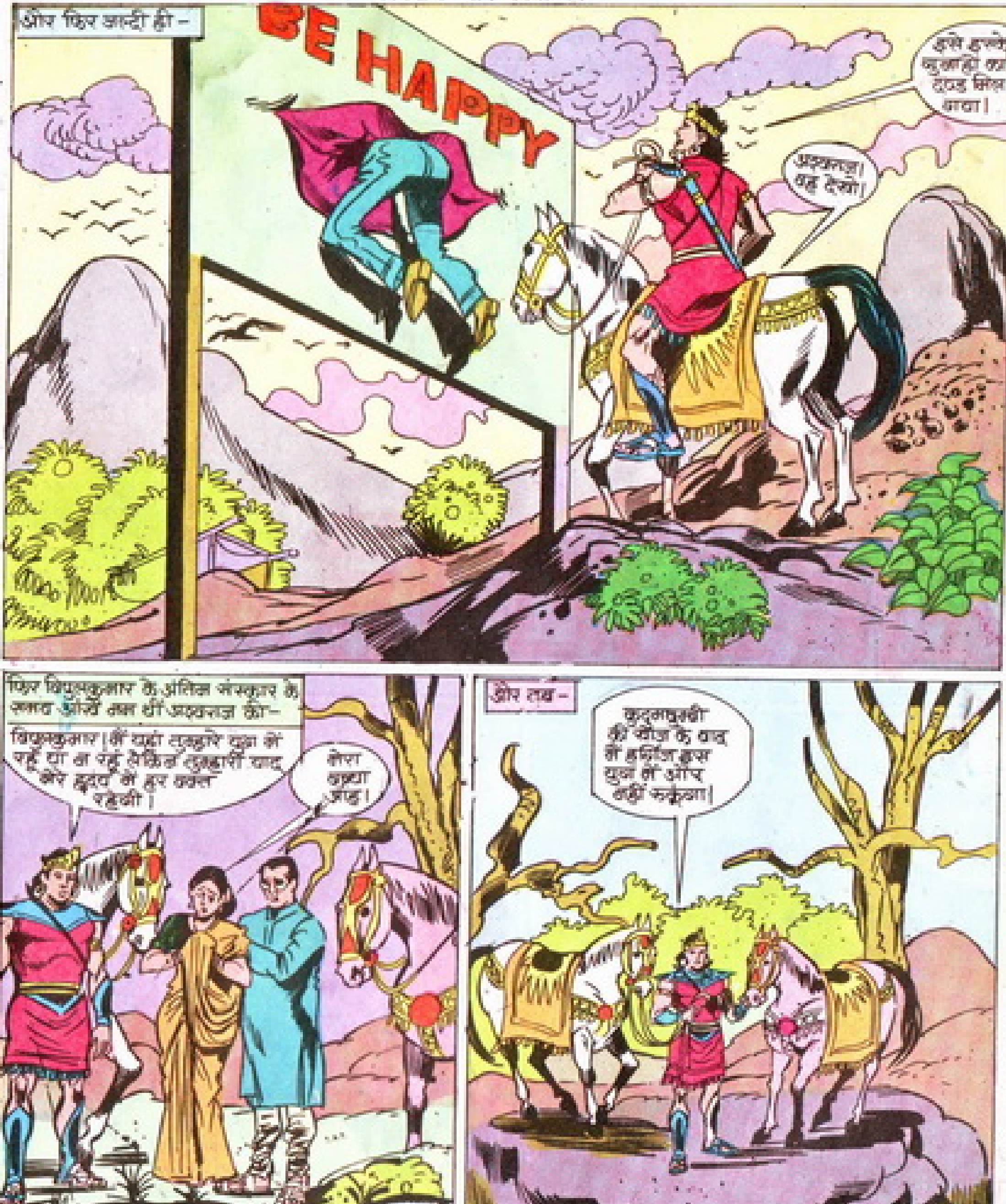




समाप्त